PROCESS OF SOCIALIZATION

Rosenberg and Turner ने ठीक ही कहा है :- **At the time of birth a child is neither social nor unsocial but he is asocial. Asocial** से तात्पर्य **biological organism** से है। जिस प्रक्रिया के माध्यम से कोई **biological organism** (प्राणीशास्त्रीय प्राणी) **Social organism** में बदल जाता है उसे **socialization** कहते हैं। दूसरे शब्दों में समाजीकरण व्यक्ति को सामाजिक जीवन के ढंग **(way of social life)** सीखने की एक प्रक्रिया है।

समाजीकरण की प्रक्रिया जन्म के कुछ दिनों बाद से आरंभ होकर, किशोरावस्था होते हुए युवावस्था से वृद्धावस्था तक पहुँचती है। वृद्धावस्था की वह अवधि जहाँ व्यक्ति को अपने बाल्य काल में लौटने की अनुभूति होने लगती है। इस स्थिति में पहुँचने पर समाजीकरण समाप्त हो जाता है। समाजीकरण की प्रक्रिया एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें अनेक संस्थाओं का योगदान होता है जिसे निम्न वर्गों में विभक्त किया जा सकता है:-

(1) Family (परिवार) :- समाजीकरण करने वाली सबसे महत्वपूर्ण संस्था व्यक्ति का अपना परिवार है। माँ के त्याग और पिता के संरक्षण में रहते हुए बच्चा जो कुछ सीखता है, वह उसके जीवन की स्थायी पूँजी होती है। माँ और पिता से बच्चे की अधिकांश आवश्यकताएँ पूर्ण होती है। बच्चा यह **observe** करता है कि कुछ कार्यों को करने पर माता-पिता उसे प्यार करते हैं, उसकी प्रशंसा करते हैं और कुछ अन्य कार्यों को करने से उसे दण्ड मिलता है, उसकी निन्दा की जाती है। परिवार में ही बच्चे को सर्वप्रथम यह ज्ञात होता है कि कौन-कौन से कार्य उसे करने हैं और किन-किन कार्यों से उसे बचना है। परिवार में प्रायः एक से अधिक सदस्य होते हैं। इनमें से प्रत्येक का अलग-अलग स्वभाव, रूचि, व्यवहार एवं भावनाएँ होती है। फिर भी इनमें से प्रत्येक के साथ बच्चे को धनिष्ठ परिवार के एक सीमित दायरे में उसे हमेशा रहना पड़ता है। इस प्रक्रिया की अवधि में वह सीख जाता है कि दूसरों के साथ किस प्रकार मिलकर रहा जाता है, दूसरों के साथ किस प्रकार अनुकूलन किया जा सकता है। इसरों के साथ अनुकूलन करने की क्षमता और सहनशीलता अत्यधिक महत्वपूर्ण गुण हैं जिसका प्रारंभिक विकास परिवार में ही होता है। परिवार में बच्चा दूसरों से आयु में छोटा होता हैं। अतः दूसरों की उम्र का एक प्रभाव उस पर पड़ता है। इसी कारण उससे जो बड़े लोग कहते हैं, वह उसका पालन करता है। इससे बच्चे में आज्ञाकारिता का गुण पनपता है।

निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि परिवार में बच्चा सामाजिक उत्तरदायित्व का अर्थ, क्षमा का महत्व और सहयोग की भावना सीखता है और अपनी मौलिक धारणाएँ, आदर्श और शैली की रचना करता है। परिवार में माता-पिता, भाई-बहन आदि के साथ सद्भावना, सहानुभूति, प्रीति

इत्यादि से बच्चे के मानसिक विकास में बहुत मदद मिलती है। परिवार ही वह आधारभूत शिक्षा संस्था है जहाँ नागरिकता का प्रथम पाठ पढ़ाया जाता है।

(2) **Play group** :- बच्चों के खेल का समूह एक महत्त्वपूर्ण प्राथमिक समूह है जिसका समाजीकरण की प्रक्रिया में अत्यन्त प्रभावशाली स्थान होता है। बच्चा जब बड़ा होकर घर से बाहर कदम रखता है तो उसका सम्पर्क अन्य बच्चों से होता है, वह उनके साथ खेलता है जिनके व्यवहार के ढंग, रीति-नीति, रूचि, मिजाज अलग-अलग होते हैं। इन विविधताओं के बीच बच्चा खेल तो खेलता ही है, साथ ही साथ वह अनुकूलन की कला, मिलकर काम करने की आदत तथा सामाजिक सम्बन्धों को परिवार के दायरे से बाहर फैलाने का ढंग भी सीखता है। वास्तव में यह भी समाजीकरण का एक महत्वपूर्ण अंग है।

(3) **शिक्षा-संस्थाएँ (Educational Institutions)** :- शिक्षा-संस्थाएँ अर्थात् स्कूल, कॉलेज आदि समाजीकरण की एक और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण संस्था है। इन्हीं संस्थाओं में बच्चे की मानसिक क्षमताओं का विकास होता है, और वह अज्ञानता से ज्ञान की ओर, और अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़ता है। शिक्षा संस्थाओं में बच्चे के लिये सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करने का क्षेत्र और भी विस्तृत हो जाता है। विद्यालय व कॉलेज में ही पुस्तकों के द्वारा बच्चे को देश-विदेशों के समाज व संस्कृति से परिचित होने का अवसर मिलता है। इससे भी उसके व्यक्तित्व के विकास में काफी सहायता पहुँचती है। इतना ही नहीं स्कूल व कॉलेज में बालक एकाधिक शिक्षकों के सम्पर्क में आता है। इनके उपदेश तथा जीवन आदर्श भी बालक को प्रभावित कर सकते हैं, जिनके आधार पर वह अपने जीवन का रास्ता चुन सकता है। बालक अपने शिक्षकों में से किसी एक शिक्षक को अपना 'आदर्श' मान सकता है, और उन्हीं के अनुरूप अपने जीवन को ढ़ाल सकता है।

(4) **धार्मिक, राजनैतिक तथा आर्थिक संस्थायें (Religious, Political and Economic Institutions)** :- धर्म का प्रभाव भी व्यक्ति के सामाजिक व्यक्तित्व के विकास पर पड़ता है। धार्मिक संस्थायें बुरे कार्य करने वालो को इहलोक और परलोक, दोनों को बिगाड़ने का भय दिखाकर, और अच्छे कार्यों के करने पर अच्छे फल की आशा दिलाकर व्यक्ति में मानवोचित गुणो को विकसित करने में सहायक सिद्ध होती है। राजनैतिक संस्थाओं का भी योगदान व्यक्ति के समाजीकरण की प्रक्रिया में होता है। उदाहरणार्थ, तानाशाही सरकार होने पर व्यक्ति के जीवन में सुरक्षा की भावना कम होती है, जिसके फलस्वरूप उसके व्यक्तित्व के स्वाभाविक विकास में बाधा पड़ती है। आज संसार में कल्याणकारी राज्य (welfare-states) का विकास तेजी से हो रहा है। आर्थिक संस्थायें भी समाजीकरण की प्रक्रिया में महत्त्व रखती हैं। व्यक्ति को अपनी आर्थिक

आवश्यकताओं की पूर्त्ति के लिए, अर्थात्, अपनी रोटी कमाने के लिये कोई-न-कोई आर्थिक क्रिया-नौकरी, व्यापार, वाणिज्य, कृषि आदि-करनी पड़ती है। व्यक्ति के इस व्यवसाय या पेशे का प्रभाव उसके विचार, आचार, मनोवृत्ति तथा क्रियाओं पर पड़ता है। श्री थॉर्सटीन वेब्लेन (Thorstein Veblen) ने इसी सत्य को इस प्रकार व्यक्त किया है - "मनुष्य वही है जो कुछ करता है, जैसे कार्य करता है, वैसा ही अनुभव और विचार भी करता है।" आपका विश्वास है कि आर्थिक या भौतिक पर्यायवरण ही वह शक्ति है, जो मानव-जीवन तथा सामाजिक विकास निश्चित करती है या उसे ढ़ालती है।

(5) पड़ोसी तथा अन्य बड़े-बुढ़ों का समूह (Neighbour and Community Group of Elders) :- इसका भी महत्त्वपूर्ण योगदान समाजीकरण की प्रक्रिया में होता है। पड़ोसियों तथा अन्य बड़े-बुढ़ों के सम्पर्क में आने से व्यक्ति के सामने अनेक नये विचार आते हैं, बातचीत तथा गप्पबाजी के दौरान व्यवहार के नये ढंग उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं, तथा उसे नये आदर्शों से परिचित होने का मौका मिलता है। इनके प्रति वह चेतन या अचेतन रूप से प्रतिक्रिया (response) करता है। फलस्वरूप उसमें नयी आदतों का विकास होता है। इससे उसका और अधिक समाजीकरण होता है।

(6) जाति तथा वर्ग (Caste and Class) :- व्यक्ति के समाजीकरण में जाति तथा वर्ग का भी महत्त्वपूर्ण योग रहता है। जाति-जन्म के आधार पर सामाजिक संस्तरण और खण्ड-विभाजन की वह गतिशील व्यवस्था है, जो खाने-पीने, विवाह, पेशा और सामाजिक सहवासों के सम्बन्ध में अनेक या कुछ प्रतिबन्धों को अपने सदस्यों पर लागू करती है। इसी प्रकार वर्ग व्यवस्था (Class system) भी व्यक्ति को एक समाजिक स्थिति (social status) प्रदान करती है, जिसके आधार पर वर्ग-चेतना (class consciousness) पनपती है, और व्यक्ति के सामाजिक सम्बन्धों का दायरा निश्चित होता है।

(7) भाषा (Language) :- समाजीकरण की प्रक्रिया का एक और महत्त्वपूर्ण साधन भाषा है। समाजीकरण का आधार सामाजिक अन्त-क्रियाएँ (social interactions) ही हैं, और भाषा की सहायता से ही ये अन्तःक्रियायें अत्यधिक सरल हो जाती है। वास्तव में मानव और पशुओं में जो आधारभूत भिन्नतायें हैं, उनमें एक प्रमुख अन्तर यही है कि पशुओं के पास भाषा के साधन का अभाव है, इसीलिये उनकी सामाजिक अन्त क्रियाओं का क्षेत्र बहुत अधिक सीमित है। भाषा के माध्यम से ही वह दूसरों के विचारों को ग्रहण करता और उनसे लाभ उठाता है। यह भाषा ही है जो व्यक्ति को धीरे-धीरे उन कर्त्तव्यों या कार्यों के विषय में बताती है, जो उसे करने हैं। भाषा के माध्यम

से ही व्यक्ति का परिचय बहुत्तर समाज व संसार से तथा बृहत्तर जीवन से होता है। भाषा के कारण ही व्यक्ति वास्तविक अर्थ में मानव बन पाता है।

(8) विवाह संस्था (Institution of Marriage) :- व्यक्ति के समाजीकरण की प्रक्रिया पर विवाह-संस्था का भी महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। विवाह के बाद ही युवक या युवती को अपनी पत्नी या अपने पति से अनुकूलन करना पड़ता है। यह अनुकूलन की प्रक्रिया स्त्रियों के लिये अधिक कठिन होती है, क्योंकि पितृवंशीय परिवार-व्यवस्था में पत्नी को पति के घर जाकर बस जाना होता है। वह घर तथा वहाँ के सब-आचार, विचार, रहन-सहन, सास-ससुर, देवर, ननद उसके लिये नये होते हैं। इनके साथ नववधू को अपना अनुकूलन करना पड़ता है। इस अनुकूलन के दौरान उसमें अनेक नई आदतें, विचार और आदर्श पनपते हैं। उसके बाद बच्चे उत्पन्न होने पर उनके साथ भी अनुकूलन करने के लिये माता-पिता को विशेषकर माँ को अपने व्यवहार में अनेक परिवर्त्तन करने पड़ते हैं। वैवाहिक जीवन के इस स्तर पर व्यक्ति प्रेम, सहयोग, सहानुभूति तथा आत्म-त्याग की भावनाओं को फिर से व्यावहारिक रूप देता है।

उपर्यूक्त विवेचना से यह स्पष्ट है कि व्यक्ति के समाजीकरण की प्रक्रिया में एकाधिक सामाजिक साधनों (social agencies) का योगदान होता है। इनमें परिवार सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण संस्था है। श्री कूले (Cooley) का कथन है कि प्राथमिक समूहों में परिवार का स्थान सबसे पहले है। परिवार के घनिष्ठ, आन्तरिक तथा स्नेह-प्रीतिपूर्ण सम्बन्धों के बीच बच्चा जो कुछ भी सीखता है, उसका प्रभाव उसके जीवन में चिरस्थायी हो जाता है। यही कारण है कि परिवार को नागरिक तथा सामाजीक जीवन की आधारभूत पाठशाला कहा गया है। पर इसका तात्पर्य यह नहीं है कि समाजीकरण की प्रक्रिया में परिवार ही सब कुछ है। बृहत्तर सामाजिक जीवन के लिये बृहत्तर संस्थाओं का योगदान वास्तव में महत्त्वपूर्ण होता है।